P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-10* June- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय मध्यम वर्ग का विकास–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Growth of the Indian Middle Class)

Paper Submission: 18/06/2020, Date of Acceptance: 29/06/2020, Date of Publication: 30/06/2020

महेन्द्र कुमार खारड़िया
सहायक आचार्य,
एबीएसटी विभाग,
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय जीवन का एक बुनियादी तथ्य है–गरीबी। वर्ष 2004–05 में देश की 37.20 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी की रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रही थी। गरीबी मुनष्य के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाती है और उसके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुंचाती है। परन्तु पिछले वर्षों में भारतीय समाज में एक वर्ग में बहुत बड़ी संख्या में वृद्धि हुई है उसको भारतीय समाज में मध्यम वर्ग कहा जाता है। मध्यम वर्ग जिसकी गणना न अमीर वर्ग तथा न गरीबी रेखा से नीचे में होती है। इस वर्ग को मध्यम वर्ग कहा जाता है तथा सबसे ज्यादा भार इसी वर्ग पर होता है। इस शोध में भारतीय मध्य वर्ग का विकास क्रम का जो सफर है उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है तथा कोशिश की है कि मध्यम वर्ग के बारे में विस्तार से जानकारी व अध्ययन करके एक शोध कार्य सम्पादित करना, जिससे इस वर्ग के बारे में भी सरकार जन–कल्याणकारी योजनाओं का लाभ दिया तथा भारतीय मध्य वर्ग को भी राहत मिले जिससे यह वर्ग भी और ज्यादा योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था तथा नव–निर्माण में दे सके तथा इसको भी ज्यादा महत्व सरकारी योजनाओं और नीतियों में मिले। विकास प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय मध्य वर्ग की तेजी से वृद्धि हुई है जो कि मुख्यतः शहरों और महानगरों तक सीमित है। इस दृष्टि से यह समावेशी विकास को प्रोन्नत नहीं करती परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा आय की संकेन्द्रण शहरी क्षेत्रों की ओर कर रही है।

Poverty is a fundamental fact of Indian life. In the year 2004-05, 37.20 percent of the country's population was living below the poverty line. Poverty hurts a man's self-esteem and hinders the development of his personality. But in the last years, a large number has increased in one category in Indian society, it is called middle class in Indian society. The middle class, which is not counted among the rich and neither below the poverty line. This class is called middle class and the maximum weight is on this class. In this research, we have done an analytical study of the journey of the development of the Indian middle class and have tried to complete a research work by studying and studying in detail about the middle class, so that the government of this class will also be public-Benefit of welfare schemes and relief to the Indian middle class so that this class can also contribute more to the Indian economy and innovation and also get more importance in government schemes and policies. The growth process has resulted in the rapid growth of the Indian middle class, which is mainly confined to cities and metros. From this point of view, it does not promote inclusive development, but is concentrating income from urban areas towards urban areas.

मुख्य शब्द : मध्यम वर्ग, भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था, समाज, आय, असमानता, विकास।

Middle Class, Indian Society, Economy, Society, Income, Inequality, Development.

प्रस्तावना

मानव विकास की अवधारणा की व्याख्या करते हुए यू.एस.डी.पी. की मानव विकास रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जन–सामान्य के विकल्पों का विस्तार किया जाता है और उनके द्वारा उनके कल्याण के उन्नत स्तर को प्राप्त किया जाता है। यही मानव विकास की

धारणा का मूल है। ऐसे सिद्धान्त न तो सीमाबद्ध होते हैं और न ही स्थैतिक। परन्तु विकास के स्तर को दृष्टि में रखते हुए जनसंख्या के पास तीन विकल्प हैं, एक लम्बा और स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, ज्ञान प्राप्त करना और अच्छा जीवन स्तर प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधनों तक अपनी पहुंच बढ़ाना। कई और विकल्प भी हैं, जिन्हें बहुत से लोग महत्वपूर्ण मानते हैं। इनमें उल्लेखनीय है : राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से सृजनात्मक और उत्पादक बनने का अवसर और स्वाभिमान एवं गांरटीकृत मानव अधिकारों का लाभ उठाना।

इसे और स्पष्ट करते हुए मानव विकास रिपोर्ट (1997) में उल्लेख किया। आय केवल एक विकल्प है जो लोग प्राप्त करना चाहेंगे, चाहे यह बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु यह उनके समग्र जीवन का स्तर नहीं है। आय एक साधन है जबकि मानव विकास एक ध्येय है।

भारतीय समाज में विभिन्न असमानताओं के कारण

समाज को तीन वर्गों में बांटा गया है। अमीर वर्ग, मध्यम वर्ग, गरीब वर्ग अर्थात् अमीर वर्ग और गरीब वर्ग के मध्य का जो वर्ग है वह मध्यम वर्ग कहलाता है। देश के अधिकतर संसाधनों पर अमीर वर्ग का अधिपत्य है उनको सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं तथा गरीब वर्ग जिसको कोई सुविधा नहीं मिलती है और इन दोनों के बाद जो वर्ग उत्पन्न होता है वह मध्यम वर्ग होता है, जिसको न तो अमीर कह सकते हैं तथा न गरीब। यह वर्ग दिन–रात अपनी ही जिन्दगी को चलाने में चलता रहता है। परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इस वर्ग का विकास हुआ है। इस वर्ग में भी सुविधाओं का विस्तार होने लगा है जो कभी सोच से ही दूर थी। सुविधाएं अब इस वर्ग को उपलब्ध हो रही हैं तथा इस वर्ग के उतरोत्तर विकास का चक्र चल पड़ा है।

शोध कार्य की उपादेयता एवं उद्देश्य

भारतीय समाज में आज कर क्षेत्र में मध्यम वर्ग ने अपनी योग्यता, दक्षता तथा लगन से जो भी अवसर मिला उसका पूरा लाभ उठाया है तथा भारतीय अर्थव्यवस्था में मध्यम वर्ग का बहुत बड़ा योगदान है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय मध्यम वर्ग के विकास क्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का महती प्रयास किया गया है, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. भारतीय माध्यम वर्ग के विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. भारतीय मध्यम वर्ग के परिवारों का वितरण के बारे में विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. भारतीय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विभिन्न आय वर्गों के आकार का अध्ययन करना।
4. भारतीय मध्यम वर्ग के आकार का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

बनोर्ड कुहन (Barnard Cohn) ने 1960 में बनारस प्रदेश को केन्द्र में रख कर एक गम्भीर शोधपूर्ण आलेख प्रकाशित करवाया, जिसका शीर्षक था The Initial British Impact on India - A Case Study of the Banaras Resion 32 यह आलेख बनारस प्रदेश में ब्रिटिश प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना का विषम अध्ययन है। इस आलेख में बनोर्ड कुहन ने उस वर्ग उदय के बीज (मूल) को हमारे सामने रखा है जो आगे चलकर मध्यम वर्ग का रूप धारण करता है।

रॉयस लिविश और एनगुस माउडे की अपनी पुस्तक 'दी इंग्लिश मिडिल क्लासेज' बहुत महत्वपूर्ण और दिलचस्प है। महत्वपूर्ण काम के स्तर पर और दिलचस्प अन्दाज के साथ इसमें लेखक ने बताया है कि कोई व्यक्ति किस वर्ग से ताल्लुक रखता है। इसके निर्धारण के लिए कई कारकों पर विचार करना पड़ता है, जिसमें आय, व्यवसाय, उच्चारण, खर्च की आदतें, आवास संस्कृति खाली वक्त को कैसे गुजारने की चाह, कपड़े, शिक्षा नैतिक दृष्टिकोण और व्यक्तियों के साथ उसके सम्बन्ध कैसे है।

सर हेनरी इलियट और जॉन डाउसन की सम्पादित पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इट्स ऑन हिस्टोरियन' में देखने को मिलता है, जिसका प्रकाशन 1876–77 में हुआ। इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास सम्बन्धी स्रोतों का बड़ी सावधानी से चयन किया गया था और उसे तैयार करने का उद्देश्य यह था कि भारतवासियों को साम्प्रदायिक आधार पर बांट दिया जाए।

पवन कुमार वर्मा ने अपनी पुस्तक भारत के मध्यम वर्ग की अजीब दास्तान ने लिखा है कि भारतीय मध्यम वर्ग की दास्तान बहुत ही अजीब है।

श्याम सुन्दर दास ने भारतीय मध्यम वर्ग, जिसका प्रकाशन बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना द्वारा किया गया है इसमें लेखक ने भारतीय मध्यम वर्ग के बारे में विस्तृत चर्चा की है तथा इसकी समस्याओं का जिक्र इसमें किया गया है।

डॉ. नासिक अहमद खान ने मिडिल क्लासेज इन इण्डिया ने भारत मिडिल क्लासेज के बारे में बताया है कि भारत में तेजी से मिडिल क्लास का विकास हो रहा है।

डॉ. पी. एम. थॉमस ने ''भारतीय मध्यम वर्ग और सामाजिक चेतना'' पुस्तक में भारतीय मध्यम वर्ग और सामाजिक चेतना के बारे में विस्तृत अध्ययन किया है, जिसमें जन–जागृति की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया गया है।

व्यक्ति या समूह के सामाजिक तथा आर्थिक स्तरों में भिन्नता ही वर्ग निर्धारण का आधार होता है। अतः एक विशेष प्रकार के सामाजिक तथा आर्थिक स्तर वाले लोग एक समूह के अन्तर्गत आकार एवं विशिष्ट वर्ग का निर्माण करते हैं।

प्रत्येक समाज का वर्ग एक महत्वपूर्ण अंग होता है, जिसका निर्धारण उस समाज के लोगों के श्रम तथा आजीविका को प्रान्त करने के साधनों द्वारा होता है। प्राचीनकाल में जब उत्पादन के साधनों का आर्थिक विकास नहीं हुआ था उस समय समाज दास और स्वामी वर्ग में विभाजित था।

वर्ग भेद की यह भावना आदिकाल से ही हमारे समाज में चली आ रही है। बहुसंख्यक समाज में सभी लोग एक ही श्रेणी के नहीं हो सकते क्योंकि सभी मनुष्यों में कर्म, गुण तथा व्यवहार में भिन्नता दिखाई देती है। इसलिए ऊंच–नीच, वर्गभेद, पूंजीवाद व सर्वहारा वर्ग का अन्तर तो समाज में निरन्तर चलता आ रहा है। राजा एवं

प्रजा, मिल मालिक एवं मजदूर शोषक एवं शोषित का द्वन्द्व तो सम्पूर्ण मानव जाति के इतिहास में परिलक्षित होता है।

मार्क्स का मानना है कि प्रत्येक समाज में दो वर्ग प्रधान रूप में दिखाई देते हैं एक जो उत्पादन पर एकाधिकार रखने वाला और दूसरा जो उत्पादन करता है। हर काल में समाज में उत्पीड़िक व उत्पीड़त वर्ग विद्यमान रहे हैं। पूंजीवादी समाज में पूंजीवादी वर्ग तथा श्रमिक वर्ग के हित बिल्कुल भिन्न होते हैं और दोनों वर्ग अपने–अपने हितों के विकास के लिए संघर्ष करते हैं। पूंजीवादी वर्ग अधिक से अधिक लाभ कमाना चाहते हैं, जबकि श्रमिक वर्ग अपनी मजदूरी की दर बढ़ाने में लगा रहता है। दोनों वर्गों के हित भिन्न होने के परिणामस्वरूप उनमें सदैव संघर्ष चलता रहता है। इससे जिस वर्ग का उदय होता है वह वर्ग मध्यम वर्ग कहलाता है। इसका बहुत तेजी से उदय हुआ है तथा तेजी से विकास हो रहा है।

भारतीय मध्यम वर्ग का विकास

एक आम विश्वास यह था कि भारतीय मध्यम वर्ग का आकार 20–25 करोड़ का व्यक्ति–समूह है। पिछले पांच दशकों के दौरान विकास प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय मध्यम वर्ग का विस्तार हुआ है।

पहले एक आम धारणा थी कि जिसके पास चिरस्थायी विलासिता की वस्तुएं – एयर कन्डीशनर, वाशिंग मशीन, एयर कूलर, कार, मोटर साईकिल आदि पर अमीर वर्ग का आधिपत्य था वह अब मध्यम वर्ग की पहुंच में आ रही है तथा अधिकतर परिवारों में यह वस्तुऐं देखी जा सकती हैं तथा शिक्षा व जीवन शैली में भी परिवर्तन आने लगा है।

भारतीय मध्यम वर्ग का विकास पिछले दशकों में तेजी से हुआ है। इसके आधार के बारे में एक विधिपूर्वक अध्ययन किया कि इसके आकार का निर्धारण का आधार क्या हो? नेशनल कांउसिल ऑफ एप्लाइड इकॉनामिक रिसर्च (N.C.A.E.R.) ने एक अध्ययन किया, जिसमें 'दि ग्रेड इंडियन मिडल क्लास' (महान भारतीय मध्यम वर्ग) पर अध्ययन किया। चूंकि मध्यम वर्ग की परिभाषा कई प्रकार से की जाती है, मुख्यतः सांस्कृतिक, कई बार शिक्षा व जीवन शैली के रूप में ये अधिकतर ऐसे चल (variable) है जो परिणात्मक (quantitative) अध्ययन के दायरे में नहीं आते हैं।

एन.सी.ए.ई.आर. द्वारा इसकी संख्या का परिकलन करने के लिए विभिन्न आय वर्गों का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन ने अपने प्रकाशन में 02 से 10 लाख रुपये की वार्षिक आय (2001–02 की कीमतों के आधार पर) प्राप्त करने वालों से 3.40 से 17.00 लाख रुपये की (2009–10 की कीमतों के आधार पर) वार्षिक आय वालों को मध्यम वर्ग में शामिल किया गया है।

इस रिपोर्ट की मुख्य बातों का विश्लेषण निम्नलिखित है –

1. 02 से 10 लाख रुपये आय कमाने वाले परिवारों (2001–02 की कीमतों के आधार पर) की परिभाषा के अनुसार मध्यम वर्ग में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि अनुभव की गई।

   1995 से 2001–02 के बीच मध्यम वर्ग के परिवारों की संख्या में 45 लाख से बढ़कर 107 लाख हो गई यानि 138 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो कि कुल जनसंख्या का 15.30 करोड़ होती है।
2. मध्यम वर्ग के निचले स्तर पर ऐसा वर्ग है जिसे इच्छुक कहा जाता है और माना जाता है कि इस वर्ग ने अभी प्रवेश किया ही है और इसकी वार्षिक आय 2.50 लाख रुपये है। 1995–96 और 2001–02 में इस वर्ग की औसत वार्षिक वृद्धि दर 15 प्रतिशत से कुछ अधिक है।

   इस वर्ग में शामिल 90 लाख परिवार अधिकतर चिरस्थायी वस्तुओं और सेवाओं के प्राथमिक क्रेता समझे गए। ऐसा माना गया कि इस वर्ग की पहुंच में प्रवेश स्तर की कारें, रंगीन टेलीविजन और रेफ्रीजेरेटर होते हैं किन्तु इनमें एयर कंडीशनर (AC) के खरीदने और इसके प्रयोग की क्षमता कम (केवल 03 प्रतिशत) है।
3. एक वर्ग 'प्रयत्नशीन का माना गया, जिसकी संख्या 17 लाख परिवार है, जिसमें उन लोगों को शामिल किया गया, जिनकी वार्षिक आय 5–10 लाख रुपये थी। इस वर्ग की अपनी एक अलग पहचान होती है। यदि इनकी तुलना अपने से थोड़े कमजोर ग्रहस्थों से की जाए तो इनकी वार्षिक वृद्धि दर 18 प्रतिशत की तीव्रता से आंकी गई। इसमें से बहुसंख्य परिवारों (ऐसे परिवारों की संख्या 50 प्रतिशत तक थी) के पास बेहतर किस्म की कारें, बड़े घर और बेहतर किस्म के रेफ्रीजेरेटर, वाशिंग मशीने और एस.सी. थे।
4. 2001–02 में केवल 08 लाख परिवार ऐसे थे जो समूह वर्ग में आते थे अर्थात् 10 लाख रुपये से अधिक आय वाले इनके 2009–10 तक बढ़कर 38 लाख हो जाने का संकेत माना गया अर्थात् 21.40 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि।

यह वर्ग उच्च श्रेणी की चिरस्थायी वस्तुएं जैसे विलासी कारों, बड़े बंगलों, पूर्णतया वातानुकूलित घर और दफ्तर रखता है और ये स्पष्ट ड्रिंक्स और महंगी शराब का भी उपयोग करते हैं।

तालिका – 01
मध्यम वर्ग का निम्नलिखित तालिका से विकास का विश्लेषण
ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न आय वर्गों का आकार

वर्ग/आय अधिक सीमा	शहरी परिवार का भाग (प्रतिशत)			ग्रामीण परिवारों का भाग (प्रतिशत)		
	2001–02	2009–10		2001–02	2009–10	
वंचित (90000 से नीचे)	18.20	15.80		81.80	84.20	
अभिलाषी	41.50	38.80		48.50	61.20	

(90 हजार से 2.00 लाख						
मध्यम वर्ग (2.00 लाख से 10.00 लाख	64.80	66.60		35.20	33.40	
समृद्ध (10.00 लाख से अधिक)	77.10	77.80		22.90	23.20	
कुल	28.40	31.20		71.60	68.60	

स्रोतः एन.सी.ए.ई.आर (2006) दि ग्रेट इंडियन मिडल क्लास

तालिका–01 में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न आय वर्गों के आकार को दिखाया गया है, जिसमें 2001–02 से 2018–19 तक शहरी परिवारों की आय तथा ग्रामीण परिवारों का भाग प्रतिशत के रूप में दिखाया गया है। वर्ष 2001–02 में वंचित शहरी वर्ग जो उन सभी सुविधाओं से वंचित वर्ग है, का भाग 18.20 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 81.80 प्रतिशत व अभिलाषी वर्ग का भाग शहरी 42.50 प्रतिशत तथा ग्रामीण परिवारों का भाग था और मध्यम वर्ग का भाग शहरी क्षेत्र में 64.80 प्रतिशत तथा 35.20 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में था और समूह वर्ग का शहरी परिवार का भाग शहरी परिवारों का आधार 77. 10 प्रतिशत तथा ग्रामीण क्षेत्र में 22.90 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों का भाग है। अर्थात् शहरी क्षेत्र में सर्वाधिक भाग समूह परिवारों का है तथा मध्यम वर्ग का भी 64.80 प्रतिशत भाग शहरी क्षेत्र में ही निवास करता है।

तालिका – 02
परिवारों का वितरण

वर्ग	परिवारों की वार्षिक आय (2004–05 की कीमतों पर)	2010–11	2015–16
वंचित	90 हजार से नीचे	134.70	113.30
अभिलाषी	90 हजार से 2 लाख	70.00	89.40
मध्यम वर्ग	2 लाख से 10 लाख	31.40	53.30
समृद्ध	10 लाख से अधिक	3.20	6.20

स्रोतः एन.सी.ए.ई.आर 2011 व भारतीय अर्थव्यवस्था एस. चांद 2018–19

तालिका–02 में परिवारों का वितरण दिखाया गया है, जिसमें वंचित, अभिलाषी, मध्यम वर्ग तथा समृद्ध वर्ग के परिवारों की वार्षिक आय का आधार (2004–05) की कीमतों को लेकर किया गया है। तालिका के विश्लेषण करने से ज्ञात हुआा कि वंचित वर्ग, जिसकी आय 90 हजार से कम थी उसका वितरण वर्ष 2010–11 में 134.70 है जो बढ़कर 89.40 हो गया अर्थात् इसमें बढ़ोत्तरी हुई है।

मध्यम वर्ग जो 2 लाख रुपये से 10 लाख रुपये तक है। इसमें परिवारों का आकार वर्ष 2010–11 में 31. 40 था जो बढ़कर 53.30 हो गया अर्थात् मध्यम वर्ग में परिवारों के वितरण में बहुत बड़ी बढ़ोत्तरी है अर्थात् मध्यम वर्ग बढ़ रहा है।

इसी क्रम में समृद्ध वर्ग जो 10 लाख से ऊपर के परिवारों के वितरण में बहुत कम बढ़ोत्तरी हुई जो वर्ष 2010–11 में 3.20 से 6.20 हो गया है।

तालिका–03
भारतीय मध्यम वर्ग का आकार

वर्ग	आय–अभिसीमा	परिवारों का भाग (लाखों में)		परिवारों का भाग (प्रतिशत)		आर्थिक वृद्धि दर (प्रतिशत)
वंचित	90 हजार से नीचे	1354 (7310)	1114 (6180)	71.90	51.30	-2.1
अभिलाषी	90 हजार से 2 लाख	413 (220)	753 (405)	21.90	33.90	7.80
मध्यम वर्ग	2 लाख से 10 लाख	107	284 (580)	5.70 (15.30)	12.80	12.90
समृद्ध	10 लाख से अधिक	8 (40)	38 (200)	0.40	1.70	21.40
कुल	–	1882 (10140)	12007 (11950)	100	100	2.10

स्रोतः एन.सी.ए.ई.आर (2006) दि ग्रेट इंडियन मिडल क्लास

तालिका–03 में भारतीय मध्यम वर्ग के आकार को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि विभिन्न वर्गों में परिवारों के आकार में सबसे निम्न आय वग (वंचित) 72 प्रतिशत से कम होकर 2009–10 तक 52 प्रतिशत होने की सम्भावना व्यक्त की गई अर्थात् 20 प्रतिशत की भारी गिरावट होगी इसके विरूद्ध अभिलाषियों का भाग 2001–02 में ल लगभग 6 प्रतिशत से बढ़कर 2009–10 में बढ़कर 12 प्रतिशत हो गया। साफ है कि विकास प्रक्रिया समूह और मध्यम वर्ग को तीव्र रूप से प्रान्नत कर रही है।

मध्यम वर्ग के परिवारों के वितरण से पता चलता है कि वर्ष 2001–02 में 6 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2009–10 में 13 प्रतिशत तक वृद्धि दर्ज की गई अर्थात् 50 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है तथा समृद्ध वर्ग

में भी मालूम बढ़ोत्तरी वर्ष 2001–02 में 8 लाख परिवारों से बढ़कर 38 लाख परिवार तक पहुंच गया है अर्थात् 0. 40 प्रतिशत से बढ़कर 1.70 प्रतिशत तक है।

नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकानामिक रिसर्च (एन.सी.ए.सी.आर.) के सर्वेक्षण 2011 में किये गये सर्वेक्षण में भी मध्यम वर्ग पर अध्ययन किया गया जो एन. सी.ए.सी.आर. द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय गृहस्थ आय एवं व्यय सर्वेक्षण 2011 के अनुसार एक बार फिर से मध्यम वर्ग के आकार का आंकलन लगाया गया।

इस सर्वेक्षण में 2.50 लाख से 12.50 लाख रुपये की वार्षिक आय वालों (2009–10 की कीमतों के आधार पर) की संख्या में 2001–02 और 2010–11 के बीच 12. 70 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। 2001–02 और 2010–11 के दौरान मध्यम वर्ग गृहस्थों की संख्या 107 लाख से बढ़कर 314 लाख दर्ज की गई यानि 193 प्रतिशत की वृद्धि। 2015–16 तक इसकी संख्या 533 लाख तक होने की सम्भावना यानि 26.70 करोड़ लोग।

एन.सी.ए.सी.आर. के अनुसार देश की जीडीपी में संवृद्धि जो लगभग 09 प्रतिशत परिकल्पित की गई और बढ़ता शहरीकरण मध्यम वर्ग के इस विस्तार के लिए जिम्मेदार है। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 2025–26 तक देश में 2015–16 के मध्यम वर्ग के आकार 1138 लाख से दोगुना होने की सम्भावना है यानि 54.70 करोड़ लोग। गौरतलब है कि 2010–11 के मध्यम वर्ग जो जनसंख्या का मात्र 13 प्रतिशत ही है। आज भारत में 49 प्रतिशत कारें, 21 प्रतिशत टेलीविजन, 53 प्रतिशत कम्प्यूटर, 53 प्रतिशत ही एयर कंडीशनर, 39 प्रतिशत मोइक्रोवेब और 46 प्रतिशत क्रेडिड कार्डों के मालिक हैं।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में विकास प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भारतीय मध्यम वर्ग में तेजी से वृद्धि हुई है जो कि मुख्यतः शहरों और महानगरों तक सीमित है। मुम्बई और दिल्ली जैसे महानगरों में भारतीय मध्यम वर्ग की वृद्धि की रफ्तार बहुत तेज है। पिछले 06 वर्षों की अवधि का आंकलन करें तो 05 गुणा वृद्धि दर्ज की गई है। ऐसी ही तेजी 'ब' वर्ग के शहरों अर्थात् नागपुर, बड़ोदरा, अहमदाबाद, सूरत और विजयवाड़ा जैसे छोटे व्यापारिक केन्द्रों में भी अनुभव की गई है।

इस दृष्टि से यह समावेशी विकास को प्रोन्नति नहीं करती परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा आय का संकेन्द्रण शहरी क्षेत्रों की ओर कर रही है। शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन का कारण रोजगार, शिक्षा तथा चिकित्सा सुविधाओं के साथ जीवनशैली की चकाचौंध में लोग शहरी क्षेत्र में बढ़ रहे हैं तथा एक नया वर्ग मध्यम वर्ग का बहुत तेजी से विकास हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *एन.सी.ए.सी.आर. की मानव विकास रिपोर्ट 1997*
2. *आर्थिक समीक्षा 2006–07 से 2019–20, भारत सरकार जनवरी 2020*
3. *भारतीय अर्थव्यवस्था, दत्त, महाजन एस, चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली, 2018–19*
4. *एन.सी.ए.सी.आर. (2006) दि ग्रेड इंडियन मिडल क्लास*
5. *अर्जुन चव्हाण, राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन*
6. *वी. बी. मिश्र दि इंडियन मिडिल क्लासेज, भूमिका*
7. *एन.सी.ए.सी.आर. सर्वेक्षण 2011*